दूसरा अध्याय

शमशेर की कविता के आयाम

२.० प्रास्ताविक

२.१ शमशेर की काव्य रचनाएँ

२.१.१ कुछ कविताएँ

२.१.२ कुछ और कविताएँ

२.१.३ चुका भी हूँ नहीं मैं

२.१.४ इतने पास अपने

२.१.५ उदिता

२.२ शमशेर के गीत

२.३ शमशेर की ग़ज़लें

२.४ शमशेर के सॉनेट

२.५ शमशेर के मुक्तक

२.६ शमशेर के काव्य की विशेषताएँ

२.६.१ प्रेमभाव का चित्रण

२.६.२ सौन्दर्य का चित्रण

२.६.३ प्रकृतिका वर्णन

२.६.४ राजनीति का चित्रण

२.६.५ नारी - चित्रण

२.६.६ प्रतिकों का प्रयोग

२.६.७ बिम्बों का प्रयोग

२.६.८ वेदना एवं निराशा का चित्रण

२.६.९ चिन्तन

२.६.१० शोषितों का चित्रण

२.६.११ विरह का वर्णन

२.६.१२ मानवता का चित्रण

२.७ निष्कर्ष ।

दूसरा अध्याय

२.० शमशेर की कविता के आयाम

प्रास्ताविक --

शमशेर बहादुर सिंह एक अच्छे कवि के रूपमें हमारे सामने आते हैं। शमशेर को हिन्दी के अद्वितीय कवि कहा जाता है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से सभी प्रकार के विषय पाठकों के सामने रखे हैं। जैसे कि राजनीति, प्रेम, विरह, चिंतन, सौन्दर्य, प्रकृति, बिम्ब, प्रतीक आदि। शमशेर प्रधान रूप से रसवादी कवि कहलाते हैं। वह एक समर्पित कवि हैं। साथ-साथ एक रोमांटिक - क्लासिकल कवि के रूपमें सामने आते हैं। हिन्दी के प्रतिभासंपन्न कवियों में समशेर बहादुर सिंह का स्थान बहुत ऊँचा है।

२.१ शमशेर की काव्य रचनाएँ --

शमशेर का काव्य देखने लायक है। उनके कई काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए हैं। जिनका पढने से पाठक ही प्रभावित हो जाते हैं। इनका पहला काव्यसंग्रह `कुछ कविताएँ' सन १९५९ में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की कविताओं का चयन जगत शेखर ने किया है। कुछ कविताएँ में कुल छत्तीस कविताएँ हैं।

सन १९६१ में राजकमल प्रकाशन से, शमशेर का दूसरा स्वतंत्र काव्यसंग्रह `कुछ और कविताएँ' प्रकाशित हुआ। इसमें उनकी सभी प्रकार की कुल उनचास रचनाएँ संकलित हैं। कुछ शेर भी संकलित हैं। इन कविताओं का चयन स्वयं शमशेर ने किया है।

शमशेर का तीसरा काव्य - संग्रह `चुका भी हूँ नहीं मैं' `राधाकृष्ण

प्रकाशन से प्रकाशित हुआ । इस काव्य - संग्रह का चयनकर्ता भी, जगत शंखधर रहे हैं । इस, संग्रह पर उन्हें सन १९७७ में ` साहित्य अकादमी पुरस्कार ` से सम्मानित किया गया । इस संग्रह में कुल पचास कविताएँ संकलित हैं । इसमें गीत, सॉनेट, मुक्तक सभी प्रकार की रचनाएँ हैं ।

शमशेर का चौथा काव्य संग्रह राजकमल प्रकाशन से ` इतने पास अपने ` प्रकाशित हुआ । इसमें अधिकतर रचनाएँ सन १९७५ के बाद की हैं । कुछ पहले की भी हैं ।

सन १९८० में शमशेर का ` उदिता ` संग्रह, वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुआ । सन १९८१ में इनका नवीनतम काव्य संग्रह ` बात बोलेगी ` सम्भावना प्रकाशन ` से प्रकाशित हुआ । इसमें कुल अडतीस रचनाएँ हैं ।

इस तरह ` दूसरा सप्तक ` को लेकर कुल सात काव्य - संग्रह इनके अधिक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह माने जाते हैं ।

३.१.१ कुछ कविताएँ --

शमशेर बहादुर सिंह का ` कुछ कविताएँ ` यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण काव्य - संग्रह है । ` कुछ कविताएँ ` में कुछ कविता देखने लायक है । शमशेर एक प्रयोगशील कवि हैं, यह बात इस कविता संग्रह में देखने को मिलती है । ` कुछ कविताएँ ` संग्रह की एक कविता ` एक पीली शाम ` महत्वपूर्ण रचना है । इसमें शमशेर ने बिम्ब का अद्भुत रूपांतरण किया है । शमशेर की यह कविता बहु - चर्चित कविता है ।

` एक पीली शाम ` कविता में प्रभाववादी अभिव्यंजनावादी अंकन के माध्यम से मरणासन्न नारी की भाव दशा को व्यंजित किया गया है ।

क्षय को प्रतीकायित करनेवाला पीला रंग सम्पूर्ण कविता पर छा जाता है । 'पीली शाम' के बिम्ब को कवि ने पतझार के पन्ने में रूपान्तरित किया है । वह पन्ने का रूपांतरण नारी के मुखकमल से कर रहा है --

" शांत
  मेरी भावनाओं में तुम्हारा मुखकमल
  कृश म्लान हास - सा
    (कि मैं हू वह
     मौन दर्पण में तुम्हारे कहीं ?) "[१]

इस 'मुखकमल' में सुबह की ताजगी नहीं, शाम की कृशता, म्लानता और थकन है ।

शमशेर की 'सागर - तट' रचना प्रतीकवादी रचना है । जिसका आरंभ चट्टान और लहरों के बीच संघर्ष को प्रस्तुत करता है । लहरें समय को और चट्टान मानवजाति को प्रतीकायित कर रही हैं । इस रचना की विषय - वस्तु है --'आदमी की हर्ष की आकांक्षा और समय द्वारा उसे खत्म करने की कोशिश' शमशेर की इस कविता पर टेनोसन की 'ब्रेक, ब्रेक ,ब्रेक' रचना का प्रभाव लक्षित होता है । अन्तर बस केवल इतना है कि 'ब्रेक, ब्रेक, ब्रेक' में 'सागर - तट' की अपेक्षा विषाद की छाया गहरी है ।

२.१.२ कुछ और कविताएँ

'कुछ कविताएँ' के बाद सन १९६१ में 'कुछ और कविताएँ' प्रकाशित हुआ । यह काव्य - संग्रह की अपने आप में प्रभावपूर्ण बन पडा है । शमशेर जी का यह भी एक उत्कृष्ट काव्य - संग्रह माना जाता है । शमशेर

ने अपने इस काव्य संग्रह में `सावन` जैसी उत्कृष्ट प्रेम रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। शमशेर प्रेम के कवि माने जाते हैं।

`सावन की घटा है
हिलता हुआ फानूस आकाश।
तुम कहाँ हो ? ये छटा .....
नाच रही है।`[२]

इसमें कवि ने प्रेमभाव का चित्रण किया है। `टूटी हुई, बिखरी हुई` शमशेर की एक प्रेम कविता है। शमशेर ने प्रेम के अनेक सूक्ष्म अनुभवों को चित्रित किया है। उन्हें प्रेम की पवित्रता पर किंचित भी संदेह नहीं ---

`आसमान में गंगा की रेत आईने की तरह हिल रही है।
मैं उसी में कीचड की तरह सो रहा हूँ
और चमक रहा हूँ कहीं ....
न जाने कहाँ।`[३]

प्रेम की पवित्रता को गंगा भी व्यंजित कर सकती है, लेकिन शमशेर इससे संतुष्ट नहीं हो सकते। इसलिए वह आकाश - गंगा के बिम्ब से प्रेम की अतिशय पवित्रता और चमक का बोध कराते हैं।

`कुछ और कविताएँ` काव्य - संग्रह में शमशेर ने सभी प्रकार की कविताओं का चित्रण किया है। खास तौर से उनका प्रेम और वेदना का चित्रण हृदयस्पर्शी बन पडा है।

` एक आदमी दो पहाड़ों को कुहनियों से ठेलता ` इस कविता में शमशेर ने एक आदमी को विराट रूप में अर्थात् समस्त मानवता के प्रतिनिधि रूपमें देखते हैं ---

` एक आदमी दो पहाडों को कुहनियों से ठेलता

पूरब से पच्छिम को एक कदम से नापता

बढ रहा है । ` [४]

इस कविता में शमशेर ने मानवता का भी चित्रण किया है । शमशेर की दूसरी कविता में ` न पलटना उधर ` में नारी का चित्रण किया है ।

` जिसके बीचोबीच तुम खडी हो

ऊध्वस्व धारा

आदि सरस्वती का आदि भाव

उसी में समाओ प्रिये । ` [५]

इस तरह नारी का उत्कृष्ट चित्रण शमशेर ने अपनी कविताओं के माध्यम से किया है ।

` वाम वाम वाम दिशा ` इस कविता के माध्यम से शमशेर ने राजनीति को अपनाया है । राजनीति का चित्रण किया है ।

" वाम वाम वाम दिशा,

समय साम्यवादी

पृष्ठभूमि का विरोध अंधकार-लीन । व्यक्ति --

कहा स्पष्ट हृदय - भार, आज हीन ।

हीनभाव, हीनभाव

मध्यवर्ग का समाज, दीन ।" [६]

इस कविता के माध्यम से शमशेर ने समाज का चित्रण किया है। मध्यमवर्गीय, गरीब समाज का चित्रण किया है। साम्यवाद का चित्रण किया है।

शमशेर ने ' भाई ' कविता के माध्यम से नारी का चित्रण किया है।

२.१.३ चुका भी हूँ नहीं मैं --

यह शमशेर का तीसरा काव्य - संग्रह है। इस काव्यसंग्रह के माध्यम से शमशेर ने कल्पना का चित्रण किया है। उनकी एक कविता ' एक नीला दरिया बरस रहा ' उत्कृष्ट कविता है। एक नीले दरिया के बरसने की कल्पना के साथ कविता का आरम्भ होता है। आकाश में जब श्वेत बादल लहरों की तरह छाये होते हैं, तब कई बार आकाश नीला दरिया-सा लगता है, जो कवि की कल्पना में बरसता - सा प्रतीत होता है। कवि को हवाएँ चौडी लगती है। हवाएँ प्राय: तेज या धीमी, नमी या सूखी होती है, पर चौडी या सँकरी नहीं। हवा तो आकारहीन

है, उसे शमशेर आकार देता है और इस तरह से जो अदृश्य है, उसे दृश्यमान करने की कोशिश करता है ।

" एक व्यर्थ का अभ्युदय

याकि

व्यर्थ का तुक

क्षण का --

निरन्तर

एक बूँद लहू

और लो मेरा अविर्भाव " [७]

शमशेर ने अपनी कविताओं के माध्यम से बहुत ही प्रतिकोंका प्रयोग किया है । इस काव्य संग्रह की एक और कविता ' शंख - घंस ' बहुत ही अच्छी कविता है । समाज - सत्य के मर्म को प्रस्तुत करना कवि का मुख्य उद्देश्य है । शमशेर के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति में शुध्द कवि - भाव व्यंजित होता है । उनकी कविताओं को पढकर सहज ही उनकी संवेदनशीलता, आर्द्रता, जोश हमारे सामने आते हैं ।

शमशेर के बारेमें डॉ. रघुवंश ने अपने एक लेख ' शमशेर : एक इन्द्रजालिक कवि ' इसमें कहा है --

" शमशेर कविता का आस्वादन अनुभव के स्तर पर ही करते हैं । ऐसा तो किसी संवेदनशील पाठक के बारे में कहा जा सकता है कि काव्य का प्रथम प्रभाव उसके मानस पर सश्लिष्ट रूप में पडता है, विश्लेषण की प्रक्रिया बाद में शुरू होती है । पर शमशेर के

बारे में यह इस प्रकार समझा जा सकता है कि वह काव्य के प्रभाव को अपनी संवेदना की प्रक्रिया से इस प्रकार सम्बध्द कर देते है कि इनको उनका अपना ही विशिष्ट अनुभव समझाना चाहिए ।`[८]

इसी प्रकार शमशेर बहादुर सिंह एक ऐन्द्रजालिक कवि के रूप में भी सामने आते हैं । शमशेर ने अपनी कविताओं के माध्यम से व्यंग्य का भी चित्रण किया है । `चुका भी हूँ नहीं मैं` इस काव्यसंग्रह की एक और कविता `सूर्यास्त` में शमशेर ने प्रतीकों का बहुत ही अच्छा प्रयोग किया है ।

`थाह लेता

विशाद

जल विशाद

विशाद`[९]

इस तरह प्रतिको का और बिम्बों का अच्छा वर्णन किया है ।

२.१.४ इतने पास अपने --

शमशेर बहादुर सिंह का यह चौथा काव्य - संग्रह महत्वपूर्ण काव्य - संग्रह है । इस काव्य - संग्रह के माध्यम से उनकी चेतना का विकास किस दिशा में हुआ है, यह तथ्य सामने आता है । इस संग्रह की अधिकतर कविताएँ कला, साथी कलाकारों की कला का स्वीकार, साहित्य और समय के चिन्तन से जुडी है । साथ ही मृत्यू - बोध सम्बन्धी रचनाएँ है, मृत्यू - बोध उनका प्रिय विषाय रहा है ।

इस कविता संग्रह के माध्यम से शमशेर ने मृत्यू, निराशा, चिन्तन

इन विषायों को अपनाया है । मोहन राकेश की मृत्यु पर लिखा शोकगीत बहुत ही हृदयस्पर्शी है । शायद अपनी तटस्थता को बताने के लिए आरम्भ में ऐसी बात करते हैं --

" मोहन राकेश

हमारा परिचय इतन कम होते हुए भी

तुम्हारी मुस्कराहट में मैंने हमेशा

एक बड़ा दीर्घ-सा और गहरा

और बड़ा सहज परिचय पाया । " [१०]

साथ - साथ शमशेर इस काव्य संग्रह में प्रेम और सौन्दर्य का भी प्रयोग किया है -- जैसे

" प्रेम का कँवल किसना विशाल हो जाता है

आकाश जितना

और केवल उसी के दूसरे अर्थ सौन्दर्य हो जाते हैं

मनुष्य की आत्मा में " [११]

इस प्रकार प्रेम और सौन्दर्य का बडा निकट संबंध है । अनुभूति के स्तर पर,प्रेम ही दूसरे अर्थ में सौन्दर्य है ।

शमशेर ने ' रोम सागर के बीचों बीच ' इस कविता में निराशा, वेदना,दु:ख आदि का बडा ही हृदयस्पर्शी वर्णन किया है । ' इतने पास अपने '

यह रचना पढ़कर ऐसा लगता है कि कविता सृजन के दरम्यान, उस लोक को, जिसकी परछाइयाँ छूने की बात की है, मानो सजीव कर लिया है । शमशेर को अचानक अपने बिछड़े हुए साथी की याद आने लगती है , वे साथी जो मृत्यु के कारण बिछडे हैं । जिनसे कवि जुडे थे, वे अब नहीं रहे, अत: उन्होंने वेदना और निराशा का चित्रन किया है ।

" एक बहुमूल्य पुराने कलम की तरह
किसी सुलगते हुए घर में एकाएक
शुभ हो गया हूँ
लपटें अब भी बराबर आ रही हैं ।" [१२]

इस प्रकार शमशेर ने इतने पास अपने कविता संग्रह में सभी प्रकार की प्रवृत्तियों का चित्रण किया है ।

२.१.५ उदिता --

सन १९८० में शमशेर का एक और संग्रह "उदिता" वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुआ । यह शमशेर की अभिव्यक्ति के संघर्ष का कवित्पूर्ण दस्तावेज है । इसमें संकलित रचनाओं पर छायावाद या उत्तर - छायावाद और प्रगतिवाद का प्रभाव देखा जा सकता है । इस संग्रह की रचनाओं से शमशेर के स्वभाव का परिचय मिल जाता है ।

"उदिता" में कुछ ग़ज़लें भी हैं । ग़ज़ल के माध्यम से शमशेर ने राजनीति का चित्रण किया है --

" कायम महाज अम्न के हिन्दोस्ताँ से हो,
फौजें न जाएँ सरहदें हिन्दोस्ताँ के पार ।।" [१३]

इस संग्रह में `लहरें`, `शाम `, `वह नगर` ऐसी रचनाएँ हैं, शाम की `उदासी` कविता में जिनमें व्यक्त हुई हैं । ये कविताएँ समान्तर चित्रवृत्ति को प्रस्तुत करती हैं । साथ - साथ इन कविताओं के माध्यम से बिम्ब को भी प्रस्तुत किया है ।

२.१.६ शमशेर के गीत --

`गीत` (Song) भी लिरिक कविता का एक प्रमुख प्रकार है । गीत सामान्य रूप से `संगीत` से जुडा है, इसमें गीत को स्वरबद्ध कर गाया जा सकता है ।

शमशेर की कविताओं में `लय` की प्रमुखता है । परंतु `गीत` रूप में उन्होंने बहुत कम रचनाएँ की हैं । कुल मिलाकर छः गीत रचनाएँ उनके संकलनों में मिलती है ।

शमशेर के गीत बहुत ही छोटे है, उन,बार-बार आवृत्त पदों में और, कम संक्षिप्त पंक्तियों में स्वरों का पूरा वैभव कल्पित किया है ।

ऐसा कहा जाता है कि, सामान्य रूप से शमशेर की कविता का गुण है, उनके गीतों में भी प्रकट हुई हैं । शमशेर का `साकन का ऊनहार` गीत पढकर ऐसा लगता है कि गीत तो शास्त्रीय राग की बंदिश में ही बाँधा जा सकता है ।

`साकन का ऊनहार` इस गीत में सौन्दर्य का चित्रण किया है । साकन के बहाने समृध्दि का एक भरा-पूरा चित्र उपस्थित होता है । साथ-साथ शमशेर ने श्रृंगार का वर्णन भी किया है । पर संयोग श्रृंगार का वर्णन अधिक मिलता है ।

शमशेर के गीत प्रकृति में रीतिकालीन लगते है । `यादें` शीर्षक से उनकी जो रचना है, उसमें शीर्षक के तुरन्त बाद कोष्ठक में एक गीत लिखा है । शमशेर के करीब सारे गीत प्रेम - गीत हैं । `कुछ और कविताएँ` संकलन में दो गीत है । --

` एक मुद्रा से ` इस गीत में शमशेर ने मुद्रा का शिल्प के आभास का वर्णन किया है ---

-- सुंदर ।

उठाओ

निज वक्ष
और कस - उभर ।` [१४]

दूसरे गीत में नायक नायिका का वर्णन किया है । सयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार का बडा अच्छा वर्णन किया है ।

` कुछ कविताएँ ` में एक और गीत है, जो इन सभी गीतों से एकदम अलग प्रकार का है । उसमें भावुक उक्तियाँ अधिक है । शाम बीत रही है, और यह शाम का आखिरी गाना है जो कवि गा रहे है । इस गीत के माध्यम से भावुकता व्यंजित हुई है ।

शमशेर के गीतों में भाषा का स्वरूप भी अलग - अलग दिखता है । ` धरोशिर ` और ` एक मुद्रा से ` गीत की भाषा काभी संस्कृतनिष्ठ शब्दों से भरी है, जब कि ` निंदिया सतावे ...` की भाषा `गीत` की भाषा लगती है । ` सावन की उनहार ` में संक्षिप्तता को अपनाया है । ` शाम का गाना ` में भावुकता को प्रकट किया है ।

शमशेर के ये गीत, परम्परागत गीत - रचना के अनुरूप नहीं है, तब भी अपने विशेषा गुणों के कारण लाक्षणिक है। शमशेर की गीत रचनाएँ कम है, फिर भी उल्लेखनीय है ।

२.१.७ शमशेर की ग़ज़लें --

शमशेर बहादुर सिंह एक अच्छे ग़ज़ल कार के रूपमें सामने आते हैं। शमशेर मुलत: हिन्दी - उर्दू के कवि हैं। इनकी ग़ज़लों की भाव-भूमि मुख्य रूप को रूमानियत से भरी हैं। शमशेर की ग़ज़लों में उर्दू शब्दों का भरसक प्रयोग हुआ है।

शमशेर ने अपनी ग़ज़लों में वेदना और प्रेमभाव का भी चित्रण किया है। देखिए एक ग़जल --

" यहाँ कुछ रहा हो तो हम मुँह दिखाएँ
उन्होंने बुलाया है क्या ले के जाएँ।" [१५]

शमशेर की ग़ज़लों में ग़ज़ल के प्रति उनकी परिपारिकता ही उभर कर सामने आती है।

उनकी ग़ज़लों में रोमानी भाव सहज ही उभर कर सामने आ गए हैं - देखिए --

" खामोशिए हुआ हूँ मुझे कुछ खबर नहीं
जाती है क्या दुआएँ तेरे आरतें के पार।।" [१६]

ग़जल मूलत: एक फारसी गीति-काव्य रूप है। उर्दू में यह काव्य-रूप बहुत लोकप्रिय रहा। ग़ज़ल हिन्दी में इतना चर्चित काव्यरूप नहीं हो पाया।

प्रेम, ग़ज़ल का परंपरागत विषय माना जाता है। शमशेर की ग़ज़लों में परंपरागत प्रतीकों का भी समावेश हुआ है। प्रेम, श्रृंगार के अतिरिक्त धर्म, ईश्वरभक्ति, देशप्रेम, मजदूरों की बात और कहीं कहीं फलसफा भी इनकी ग़ज़लों का विषय बनकर आते हैं। शमशेर मुख्यत: प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। देश - प्रेम, सामाजिक चेतना आदि विषय उनके काव्य में चर्चित किये हैं।

प्रेमी का आशिकी - मिजाज,प्रेमिका की कठोरता, तीव्र विरह, आदि परम्परागत रूप इनकी गजलों में आते हैं । शमशेर ने अपनी ग़ज़लों में उर्दू शब्दों और मुहावरों का बेहिचक प्रयोग किया है ।

३.१.८ शमशेर के सॉनेट --

शमशेर बहादुर सिंह ने सॉनेट भी लिखे हैं । सॉनेट हिन्दी में लिखनेवाले बहुत कम कवि हैं । शमशेर के सॉनेट ` प्रयोग ` के प्रति उनकी सजगता को पुष्ट करते हैं । चौदह पंक्तियों के इस काव्य - रूप में प्राय: विभिन्न छन्दों का प्रयोग किया जाता है ।

` चुका भी हूँ नहीं मैं ` में एक सॉनेट है जिसके नीचे नोट दिया गया है --

> ` एक ही रूबाई के अन्तर्गत रूबाई के लिए
> निश्चित छन्दों में से दो या तीन विभिन्न छन्द
> तक प्रयुक्त हो सकते हैं । इस सॉनेट में मैंने रूबाई
> के लिए निश्चित छन्दों में से कड़ियों का प्रयोग किया
> है । ` [१७]

सॉनेट की प्रास - पध्दति, उसके रूपाकार में महत्वपूर्ण है । शमशेर के सॉनेट की प्रास पध्दति की चर्चा देखने लायक है ।

सॉनेट मूलत: इटालियन काव्य प्रकार है । शमशेर के कुल छ: उपलब्ध सॉनेटों में से तीन पेटरार्किन पध्दति से पंक्तियों में विभाजित है । उनके सॉनेटों में सामान्य और रहस्यवादी दोनों प्रकार की चर्चा हुई है ।

२.१.९ शमशेर के मुक्तक --

निराला ने कविता को छन्द के बन्धन से मुक्त किया, परंतु प्राय: शमशेर ने अपनी मुक्त छन्द की रचनाओं में छन्द के टुकडों का प्रयोग किया है। लयबध्दता को शमशेर ने कविता का प्राण माना।

" भावानुरूप, लम्बी - छोटी पंक्तियों में, विभिन्न बिम्बों एवं प्रतीकों, इन्द्रियव्यत्यधारा, विशेष भावदशा एवं संकुल अनुभूतियों को अधिक अच्छी तरह से व्यक्त किया जा सकता है। यही मुक्तछन्द का स्वरूप है।" १८

"टूटी हुई बिखरी हुई" यह सर्व प्रथम रचना मुक्तक में है। इस रचना में प्रेम भाव का चित्रण किया है। देखिए ---

"टूटी हुई बिखरी हुई चाय
की दली हुई पाँव के नीचे
पत्तियाँ
मेरी कविता।" १९

इसकी संरचना विशिष्ट है। यह एक सौ चौदह छोटी-बडी पंक्तियों की कविता है, जिसमें शमशेर ने प्रेम भाव का अच्छा चित्रण किया है।

अपनी मुक्तक रचनाओं में कहीं कोई गीत देना, उनकी एक और विशेषता है। इस दृष्टि से उनकी "आओ", "सावन", "नशा", "सागर - तट", "घनीभूत पीडा", "एक सिम्फनी", "जिन्दगी का प्यार" आदि रचनाएँ महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय हैं।

`नशा` कविता में भी एक गीत है, जो दो अछान्दस खण्डों के बीच है।

शमशेर ने कई रुबाइयाँ भी लिखी हैं। यह रुबाई ग़ज़ल की तरह उर्दू का एक प्रसिध्द काव्य-रुप है। सामान्य रुप से कहा जाता है, कि रुबाई चार मिसरों का टुकड़ा है, जो `मुक्तक` से साम्य रखता है। हिन्दी कवियों ने रुबाई को मुक्तक का ही पर्याय समझा है। शमशेर ने कुछ सफल रुबाइयाँ भी लिखी है।

२.२ शमशेर के काव्य की विशेषाताएँ --

इस समूचे विवेचन के आधारपर मेरी राय में शमशेर के काव्य की प्रमुख विशेषाताएँ निम्नालिखित हैं --

१ प्रेमभाव का चित्रण --

शमशेर मूलत: प्रेम के कवि हैं। उनकी कई कविताएँ प्रेम के संदर्भ में लिखी गयी हैं। उन्होंने प्रेम का सर्वोत्कृष्ट चित्रण किया है। उनके काव्य और रचना का मूल विषाय तो प्रेम है। कई कविताओं में प्रेम का अच्छा वर्णन मिलता है। जैसे -- कि `साक्न`, `टूटी हुई बिखरी हुई`, `नशा`। देखिए --

`यह आसमान
घूम रहा है मेरी चौखट।
मैं चाँद और सूरज को निकालूँ
आल्मारी मे रखे हुए एल्बन से।
तुम आओ न।
तुम कहाँ हो ? य छटा ....।` [२०]

इसी तरह इन कविताओं में प्रेमभाव का वर्णन मिलता है ---

२ सौन्दर्य का चित्रण--

शमशेर ने अपनी कविताओं में सौन्दर्य का भी वर्णन किया है। उनकी `कला सौन्दर्य` यह कविता इसका प्रमाण है। सौन्दर्य वर्णन का उदाहरण --

`और पहुँच कर वहीं
अपने प्रेम की
बाहों में बाँहें डाल दी मैंने

अमर सौन्दर्य का
कोई इशारा - सा
एक तीर।`

शमशेर की `चीन` नामक कविता भी सौन्दर्य - वर्णन का एक परिचायक है। इसमें सौन्दर्य का अद्भुत वर्णन किया गया है।

३ प्रकृति का वर्णन --

शमशेर एक क्लासिकल कवि हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति का चित्रण प्रस्तुत किया है। उनकी `सूर्यास्त` जैसी कविता दृष्टव्य बन पडी है। `सूरज उगाया जाता` इस कविता में भी प्रकृति का चित्रण किया गया है ---

`सूरज
उगाया जाता
फूलों में
यदि हम
एक साथ
हँस पडते।` [२२]

४ राजनीति का चित्रण --

शमशेर ने अपनी कविताओं में राजनीति का भी चित्रण किया है। राजनीति के बारेमें वे अधिक दिलचस्प हैं। `वाम वाम वाम दिशा` नामक कविता में उन्होंने राजनीति का वर्णन किया है --

` लोकतंत्र - पूत वह
दूत, मौन, कर्मनिष्ठ
जनता का
वाम वाम वाम दिशा :
समय : साम्यवादी।` [२३]

५ नारी का चित्रण --

शमशेर ने अपनी कविता में नारी का बहुत कम चित्रण किया है, लेकिन वह भी देखने लायक है। `माई` नामक कविता में उन्होंने नारी का चित्रण किया है ---

` अब
हो उठा है मौन का उर
और भी मौन ...
दुख उठा है करुण सागर का हृदय,
साँझ कोमल और भी अपनाव का ....
आँचल ।।` [२४]

12292
A

६ प्रतिकों का प्रयोग --

शमशेर ने अपनी बहुत-सी कविताये में प्रतिकों का प्रयोग किया हैं । उनके प्रतिक देखने लायक हैं । उनकी ` दो मोती कि दो चन्द्रमा ` कविता बडी द्रष्ठव्य हैं ---

" उस अग्नि का स्वर हैं
हम सब जो प्यार करते हैं
वह मधु की चट्टान जो तोड चुकी थी
कठिनतम हीरों का व्यंग्य , वह मधु की चट्टान ।"[२५]

७ बिम्बों का प्रयोग --

शमशेर का बिम्बों का रचना - संसार बहुत बड़ा हैं । उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से बिम्बों को प्रस्तुत किया हैं । ` उनकी ` साक्न `, ` पूरा आसमान का आसमान `, ` एक नीला दरिया बरस रहा हैं `, ` एक पीली शाम `, ` सूर्योदय ` आदि कविताओं में सुन्दर बिम्ब देखे जा सकते हैं --

" और फिर मानो कि मैं
एक मत्स्य - हृदय में
बहुत ही रंगीन
लेकिन
बहुत सारा साँवलापन लिये ऊपर । " [२६]

८ वेदना और निराशा का चित्रण --

शमशेर ने अपनी कविताओं में वेदना और निराशा का कलात्मक वर्णन किया है । उनकी ` रोम सागर के बीचों बीच , ` हमारी जमीन ` ये कविताएँ देखने योग्य है --

` हमीं एक हमेशा के आलसी

पिछड गये है

क्यों आखिर .... । ` २७

उनकी बहुत ही कविताएँ मृत्यू से संबंधित है । इसलिए उन्होंने अपनी कविताओं में वेदना और निराशा का वर्णन किया है ।

९ चिन्तन --

शमशेर की बहुत - सी कविताएँ चिन्तन संबंधी है । चिन्तनशील वृत्ति का परिचय उनकी रचनाओं में मिलता है । ` चुका भी हूँ नहीं मैं ` इस संग्रह की बहुत - सी कविताएँ चिन्तन से जुडी है ।

१० शोषितों का चित्रण --

शमशेर ने अपनी कविता में शोषितों का चित्रण किया है । शोषित वर्ग, मजूर ,कंगाल आदि लोगों का चित्रण द्रष्टव्य है ---

` दैन्य दानव , काल

भीषाण; क्रूर

स्थिति, कंगाल

बुध्दि ; घर मजूर । ` २८

इसी प्रकार शमशेर ने मजदूर लोगों का भी वर्णन किया है ।

११ विरह का वर्णन --

शमशेर ने अपनी कविता में विरह का बहुत वर्णन प्रस्तुत किया है । शमशेर ने प्रेम के अंतर्गत वियोग श्रृंगार और संयोग श्रृंगार का अनुपम वर्णन किया है ।

* सूना - सूना पथ है, उदास झरना

एक धुंधली बादल - रेखा पर टिका हुआ

.... आसमान ।।' [२९]

१२ मानवता का चित्रण --

शमशेर बहादुर सिंह ने कई कविताओं में मानवता का चित्रण किया है । उनकी 'मुक्तेश्वर', 'जिन्दगी का प्यार', 'एक आदमी दो पहाड़ों को कुहनियों से ठेलता' आदि कविताओं में मानवता का चित्रण देखने को मिलता है ---

* कितनी ऊँची घासें चाँद-तारों को छूने छूने को है

जिनसे घुटनों को निकालता वह बढ़ रहा है

अपनी शाम को सुबह से मिलता हुआ ।' [३०]

२.३ निष्कर्ष --

ऊपर विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकालता है कि सचमुच ही शमशेर का काव्य बड़ा ही प्रभावशाली है । मूलत: शमशेर प्रेम और सौन्दर्य के अनुपमेय कवि हैं । उनके काव्य के कई आयाम हैं जो मन को लुभाते हैं । उनकी

ग़ज़लें, सॉनेट, मुक्तक आदि रचनाएँ बहु चर्चित हैं । वे एक समर्पित कवि हैं । उन्होंने अपने मन की भावनाओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया हैं । उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रतिकों एवं बिम्बों का बडा सफल प्रयोग किया हैं ।

शमशेर की कविताओं का निचोड हैं प्रेम एवं सौन्दर्य जहाँ शमशेर ने वेदना और निराशा का चित्रण किया हैं, वहाँ उनमें मानवतावादी विचारधारा भी पायी जाती हैं । शमशेर की कविता के विभिन्न आयाम एवं प्रवृत्तियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि उनका काव्य असाधारण कोटिका हैं ।

संदर्भ

१ एक पीली शाम - कुछ कविताएँ - पृ.२ ।

२ सावन - कुछ और कविताएँ - पृ.६३ ।

३ टूटी हुई, बिखरी हुई - कुछ और कविताएँ - पृ.५२ ।

४ एक आदमी दो पहाड़ों की कहानियों से टेलता - कुछ और कविताएँ-पृ.७

५ न पलटना उधर - कुछ और कविताएँ - पृ.४६

६ कुछ और कविताएँ- वाम वाम वाम दिशा - पृ.८

७ एक नीला दरिया बरस रहा - चुका भी हूँ नहीं मैं - पृ.१०

८ शमशेर - डॉ.वंशुवंश - शमशेर एक ऐन्द्रजालिक कवि - पृ.५९

९ सूर्यास्त - चूका भी हूँ नहीं मैं - पृ.२३

१० मोहन राकेश के साथ एक तटस्थ बातचीत - चूका भी हूँ नहीं मैं - पृ.३२

११ इतने पास अपने - कला - पृ.४४

१२ - वही - - रोम सागर के बीचों बीच - पृ.३२

१३ गजल - कुछ और कविताएँ - पृ.५५

१४ एक मुद्रा से - कुछ और कविताएँ - पृ.५८

१५ कुछ और कविताएँ- गजल - पृ.६७

१६ ग़ज़ल एक यात्रा - सूर्यप्रकाश शर्मा - पृ.५५

१७ चुका भी हूँ नहीं मैं - पृ.५५

१८ कवियोंका कवि शमशेर - डॉ.रंजना अरगडे - पृ.५८

१९ कुछ और कविताएँ - टूटी हुए बिखरी हुई - पृ.५१

२० सावन - कुछ और कविताएँ - पृ.६३

२१ चीन - कुछ और कविताएँ - पृ.४४

२२ कुछ और कविताएँ - सूरज उगाया जाता - पृ.५

२३ - वही - - वाम वाम वाम दिशा - पृ.९

२४ - वही - - माई - पृ.१४

२५ दो मोती कि दो चन्द्रमा होते - चुका भी हूँ नहीं मैं - पृ.१४

२६ पूरा आसमान का आसमान - कुछ कविताएँ - पृ.४

२७ रोम सागर के बीचों बीच - इतने पास अपने - पृ.३१

२८ कुछ और कविताएँ - बात बोलेगी - पृ.३

२९ सूना सूना पथ रें उदास झारना - कुछ और कविताएँ - पृ.४८

३० एक आदमी दो पहाड़ों को कुहानियों से ठेलता - कुछ और --
-- कविताएँ -- पृ.७